NAME OF THE COLLEGIE — Godda college, Godda

SL NO	DATE	NAME OF THE TEACHER	SUBJECT	SEM	TOPIC	MODE ADOPTED
01	01.05.2020	Md Mahtab Ahmad	CC-08	B.Ed 2nd year	Types of School Records and Registers	Pdf
02	03.05.2020	Md Mahtab Ahmad	CC-08	B.Ed 2nd year	Time Table	Pdf
03	05.05.2020	Md Mahtab Ahmad	CC-08	B.Ed 2nd year	Principles of Framing Time Table	Pdf
04	08.05.2020	Md Mahtab Ahmad	CC-08	B.Ed 2nd year	Class-Teacher	Pdf
05	11.05.2020	Md Mahtab Ahmad	CC-08	B.Ed 2nd year	Leadership qualities and Role: Head of School.	Pdf
06	15.05.2020	Md Mahtab Ahmad	CC-08	B.Ed 2nd year	School office	Pdf
07	20.05.2020	Md Mahtab Ahmad	CC-08	B.Ed 2nd year	Activities	

Scanned by CamScanner

CURRICULAR ACTIVITIES
पाठ्यक्रम सम्बन्धी क्रियाएँ

पाठ्यक्रम सम्बन्धी क्रियाओं का अर्थ

जो क्रियाएँ पाठ्यक्रम की व्याख्या तथा उसे स्पष्ट करने में सहायक होती है उन्हें अंग्रेजी में 'Curriculum activities' कहते हैं। दूसरे शब्दों में, शिक्षण को आकर्षक और प्रभावशाली बनाने के लिए पाठ्यक्रम सम्बन्धी क्रियाओं का आयोजन किया जाता है। इन क्रियाओं की सहायता से प्रत्येक विषय सुबोध, सरल तथा रोचक हो जाता है।

पाठ्यक्रम सम्बन्धी क्रियाओं के भेद

जो क्रियाएँ पाठ्यक्रम को स्पष्ट करने तथा उसे आकर्षक बनाने में विशेष सहायक होती है उन्हें निम्न शीर्षकों में विभाजित किया जा सकता है।

(1) पाठ्य-पुस्तकें
(2) श्यामपट
(3) (अ) प्रदर्शनात्मक उदाहरण तथा
(ब) श्रव्यात्मक तथा दृश्यात्मक सामग्री
(4) विनिमालय
(5) विज्ञान वाटिका
(6) प्रयोगशाला तथा कारखाना
(7) पुस्तकालय

प्रत्येक प्रधानाध्यापक का कर्तव्य है कि वह विद्यालय में शिक्षण को प्रभावशाली तथा आकर्षक बनाने के लिए इन क्रियाओं के संगठन पर विशेष रूप से ध्यान दे। जिन विद्यालयों में पाठ्यक्रम सम्बन्धी क्रियाओं के संगठन को विशेष महत्व दिया जाता है, वहाँ का शिक्षण-स्तर अन्य विद्यालयों की अपेक्षा ऊँचा होता है।

(1) पाठ्य-पुस्तकें

पाठ्य-पुस्तकों का महत्व सदा रहता आया है। प्राचीनकाल में पाठ्य-पुस्तकों का प्रयोग विशेष रूप से किया जाता था। पुस्तक में जो कुछ भी लिखा होता था उसे छात्र जैसा का तैसा रट लेते थे, चाहे वे उसका अर्थ अभी प्रकार से समझते हों या नहीं। अध्यापक वर्ग पाठ्य-वस्तु के रटने पर बल देते थे तथा जो छात्र जितना पाठ्य-विषय को रट लेते थे उन्हें उतना ही योग्य माना जाता था।

Scanned by CamScanner

इस प्रकार पाठ्य-पुस्तकों का छात्रों पर आतंक छाया रहता था। पाठ्य-पुस्तकों के अनुचित प्रयोग द्वारा बालकों की स्मरण-शक्ति पर अत्याचार किये जाते थे।

पाठ्य-पुस्तकों की उपयोगिता

(1) इनके उपयोग से छात्र तथा अध्यापक दोनो का समय बचता है।
(2) कम मूल्य पर छात्र महत्वपूर्ण तथ्य तथा सूचनाएँ प्राप्त कर लेते हैं।
(3) पाठ्य पुस्तके छात्रों को स्वाध्याय की प्रेरणा देती है।
(4) पाठ्य-पुस्तकों की सहायता से अध्यापक पाठ को तैयार कर सकता है।
(5) गृह कार्य के लिए पाठ्य-पुस्तके विशेष रूप से सहायक होती हैं।
(6) मौन अध्ययन का अभ्यास पाठ्य-पुस्तकों द्वारा ही कराया जा सकता है।
(7) डाल्टन प्रणाली तथा योजना प्रणाली में पाठ्य-पुस्तकों की परम आवश्यकता होती है।

(2) श्यामपट

श्यामपट को अध्यापकों का मित्र कहकर पुकारा जाता है। प्रत्येक कक्षा में श्यामपट का होना परम आवश्यक माना जाता है।

श्यामपट से लाभ

(1) सहायक सामग्री के स्थान पर श्यामपट का प्रयोग सरलतापूर्वक प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है।
(2) अध्यापक श्यामपट पर पाठ की मुख्य बातें ही लिखते हैं अत: छात्रों को ज्ञान हो जाता है कि पाठ के मुख्य तत्व क्या हैं?
(3) श्यामपट द्वारा छात्रों का ध्यान पाठ्य विषय की ओर केन्द्रित किया जा सकता है।
(4) श्यामपट के प्रयोग से श्रवण तथा चक्षु दोनों इन्द्रियों का प्रयोग होता है
(5) श्यामपट पर अध्यापक स्वयं स्पष्ट लिखकर छात्रों के सामने एक आदर्श उपस्थित कर सकता है।
(6) भाषा-शिक्षण में उच्चारण का अभ्यास श्यामपट श्यामपट पर लिख कर ही किया जा सकता है।

Scanned by CamScanner